INFUSION NOTES

WHEN ONLY THE BEST WILL DO

उ.प्र. उप निरीक्षक

UPSI/PLATOON COMMANDER /PAC

उत्तर प्रदेश पुलिस भर्ती एवं प्रोन्नत बोर्ड

भाग – 1

सामान्य हिंदी

प्रस्तावना

*प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स "**उ. प्र. पुलिस SI (उप निरीक्षक)**" को एक विभिन्न अपने अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है / ये नोट्स पाठकों को* **उत्तर प्रदेश पुलिस भर्ती एवं प्रोन्नति बोर्ड** *द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा "**उ. प्र. पुलिस SI (उप निरीक्षक)/ Platoon Commander/PAC**" भर्ती परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगें /*

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स में कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती है / अतः आप सूचि पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं/

प्रकाशकः

INFUSION NOTES

जयपुर, 302029 (RAJASTHAN)

मो : 9887809083

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : http://www.infusionnotes.com

WhatsApp करें - https://wa.link/001xtz

Online Order करें - https://shorturl.at/sxD46

मूल्य : ₹	संस्करण : नवीनतम

	हिंदी	
क्र.सं.	अध्याय	पेज नंबर
1.	हिंदी वर्णमाला	1
2.	संधि एवं संधि विच्छेद	4
3.	समास एवं समास – विग्रह	19
4.	उपसर्ग	36
5.	प्रत्यय	41
6.	तद्भव एवं तत्सम, देशज, विदेशज	50
7.	संज्ञा	58
8.	सर्वनाम	63
9.	विशेषण	65
10.	क्रिया	68
11.	अव्यय (अविकारी शब्द)	70
12.	पर्यायवाची शब्द	75
13.	विलोम शब्द	86
14.	शब्द युग्म भिन्नार्थक शब्द	102
15.	वाक्यांश के लिए सार्थक शब्द	114

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

16.	समश्रुत भिन्नार्थक शब्द / अनेकार्थी शब्द	128
17.	शब्द शुद्धि	130
18.	परसर्ग / कारक	135
19.	लिंग	138
20.	वचन	140
21.	काल	142
22.	वाच्य	144
23.	वाक्य रचना एवं वाक्यों के प्रकार तथा पदबंध	145
24.	पदबंध	150
25.	वाक्य-शुद्धि	151
26.	विराम-चिह्न	158
27.	मुहावरे तथा लोकोक्तियाँ	161
28.	हिंदी भाषा एवं बोलियाँ	173
29.	उत्तर प्रदेश की प्रमुख बोलियाँ	176
30.	रस	177
31.	अलंकार	181
32.	छंद	189
33.	पारिभाषिक : प्रशासनिक शब्दावली	194

हिंदी

अध्याय – 1

हिंदी वर्णमाला

भाषा के दो रूप होते हैं-

1. **मौखिक या उच्चारित भाषा-** मौखिक भाषा की सूक्ष्मतम इकाई ध्वनि होती है। वास्तव में ध्वनि का संबंध सुनने व बोलने से है। यह भाषा उच्चारण पर आधारित होती है। उच्चारण करने के लिए मानव के जो मुख्य-अवयव काम करते हैं वह उच्चारण अवयव कहलाते हैं।

2. **लिखित भाषा-** लिखित भाषा की सूक्ष्मतम इकाई वर्ण होती है। वर्ण का संबंध लिखने व देखने से है। वर्ण ध्वनि रूपी आत्मा का शरीर है।
लिखित रूप से भाषा की वह छोटी से छोटी इकाई जिसके टुकड़े नहीं किए जा सकते हो वर्ण कहलाते हैं।
जैसे एक शब्द है - नीला।
नीला शब्द के यदि टुकडे किए जाए तो वे होंगे- नी + ला
अब यदि नी और ला के भी टुकड़े किए जाए तो वे होंगे- न् + ई तथा ल् + आ।
अब यदि न ई, ल् आ के भी हम टुकडे करना चाहे तो यह संभव नहीं है। अतः ये वर्ण कहलाते हैं।
ये वर्ण दो ही प्रकार के होते हैं- स्वर तथा व्यंजन
वर्णों के मेल से शब्द बनते हैं, शब्दों के मेल से वाक्य तथा वाक्यों के मेल से भाषा बनती है। अतः वर्ण ही भाषा का मूल आधार है।
हिंदी में वर्णों की संख्या 44 है।
वर्णों को दो भागों में बांटा जाता है
1. **स्वर** 2. **व्यंजन**

1. **स्वर** - स्वतंत्र रूप से उच्चारित होने वाली ध्वनियाँ स्वर कहलाती हैं, अर्थात वे वर्ण जिनके उच्चारण में किसी अन्य वर्ण के सहयोग की आवश्यकता नहीं होती स्वर कहलाते हैं।
स्वरों की संख्या 11 - अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ
मात्राओं की संख्या 10 - क्योंकि 'अ' की कोई मात्रा नहीं होती।
2. **व्यंजन** - वे वर्ण जिनके उच्चारण में किसी अन्य वर्ण के सहयोग की आवश्यकता होती है, अर्थात स्वरों के सहयोग से उच्चारित होने वाली ध्वनियाँ व्यंजन कहलाती है।
व्यंजनों की संख्या 33 होती है।

विशेष

1. हिंदी निदेशालय 1966 के अनुसार कुल वर्णों की संख्या 52 मानी गई है।
2. हिंदी की मानक लिपि 'देवनागरी' के अनुसार कुल वर्णों की संख्या 52 मानी गई है।
स्वरों का वर्गीकरण पाँच भागों में बांटा जाता है।

1. उच्चारण अवधि के आधार पर-

1. **लघु स्वर-** वे स्वर जिनके उच्चारण में कम समय लगता है, अर्थात् एक मात्रा का समय लगता है, लघु स्वर कहलाते हैं।
जैसे- अ, इ, उ, ऋ
इन्हें मूल स्वर और ह्रस्व स्वर भी कहते हैं।

2. **दीर्घ स्वर-** वे स्वर जिनके उच्चारण में लघु स्वरों की तुलना में दोगुना समय लगता है अर्थात दो मात्रा का समय लगता है, दीर्घ स्वर कहलाते हैं।
जैसे- आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ
इन्हें संधि स्वर भी कहते हैं।

2. ओष्ठाकृति के आधार पर -

1. **वृत्ताकार स्वर-** वे स्वर जिनके उच्चारण में होठों की आकृति वृत्त के समान गोल हो जाती है, वृत्ताकार स्वर कहलाते हैं।
जैसे- उ, ऊ, ओ, औ
2. **अवृत्ताकार स्वर-** वे स्वर जिनके उच्चारण में होठों की आकृति वृत के समान गोल न होकर फैले रहते हैं। अवृत्ताकार स्वर कहलाते हैं।
जैसे- अ, आ, इ, ई, ऋ, ए, ऐ

3. जिह्वा की क्रियाशीलता के आधार परः-

1. **अग्र स्वर-** वे स्वर जिनके उच्चारण में जिह्वा का अगला भाग क्रियाशीलता रहता है, अग्र स्वर कहलाते हैं।
जैसे- इ, ई, ऋ, ए, ऐ

2. **मध्य स्वर-** वे स्वर जिनके उच्चारण में जिह्वा का मध्य भाग क्रियाशील रहता है, मध्य स्वर कहलाते हैं।
जैसे- 'अ'

3. **पश्च स्वर-** वे स्वर जिनके उच्चारण में जिह्वा का पिछला (पश्च) भाग क्रियाशील रहता है, पश्च स्वर कहलाते हैं।
जैसे- आ, उ, ऊ, ओ, औ

4. मुखाकृति के आधार पर -

1. **संवृत स्वर**- वे स्वर जिनके उच्चारण में मुख वृत्त के समान बंद-सा रहता है, अर्थात् सबसे कम खुलता है, संवृत स्वर कहलाते हैं।

   जैसे- इ, ई, उ, ऊ, ऋ

2. **अर्द्ध संवृत स्वर**- वे स्वर जिनके उच्चारण में मुख संवृत स्वरों की तुलना में आधा बंद-सा रहता है, अर्द्ध संवृत स्वर कहलाते हैं।

   जैसे- ए, ओ

3. **विवृत्त स्वर**- विवृत का अर्थ होता है 'खुला हुआ', वे स्वर जिनके उच्चारण में मुख्य पूरा खुला रहता है अर्थात सबसे ज्यादा खुला रहता है विवृत स्वर कहलाते हैं ।

   जैसे- 'आ'

4. **अर्द्ध विवृत्त** - वे स्वर जिनके उच्चारण में मुख विवृत स्वरों की तुलना में आधा और अर्द्ध-संवृत स्वरों की तुलना में ज्यादा खुला-सा रहता है, अर्द्ध विवृत स्वर कहलाते हैं। जैसे- अ, ऐ, औ

5. नासिका के आधार पर-

1. **निरनुनासिका स्वर**- वे स्वर जिनके उच्चारण में नासिका का प्रयोग नहीं किया जाता अर्थात् सिर्फ मुख से उच्चारित होने वाली ध्वनियाँ, निरनुनासिक कहलाती हैं।

   जैसे- सभी स्वर

2. **अनुनासिक स्वर**- वे स्वर जिनके उच्चारण में नासिक का प्रयोग किया जाता है, अर्थात मुख के साथ-साथ नासिक से भी उच्चारित होने वाली ध्वनियाँ अनुनासिक। सानुनासिक कहलाती है। जैसे- अँ, आँ, इँ, ईं, उँ, ऊँ, ऋँ, एँ, ऐं, ओं, औं

व्यंजनों का वर्गीकरण

1. **उच्चारण प्रयत्न के आधार पर-**
ध्वनियों के उच्चारण में होने वाले यत्न को 'प्रयत्न' कहा जाता है। यह प्रयत्न तीन प्रकार से होते हैं-

1. **स्वरतंत्री में कंपन्न**- स्वरतंत्रियो में होने वाली कंपन्न, नांद या गूंज के आधार पर व्यंजनों के दो भेद किए जाते हैं - सघोष और अघोष

   अघोष वर्ण- जिन ध्वनियों के उच्चारण में भारीपन नहीं रहता है वे अघोष ध्वनियाँ कहलाती है। वर्गीय व्यंजनों के पहले व दूसरे व्यंजन अघोष होते हैं। (क, ख, च, छ, ट, ठ, त, थ, प, फ तथा ष, श, स)।

   सघोष वर्ण- जिन ध्वनियों के उच्चारण में भारीपन रहता है वे सघोष ध्वनियां कहलाती है।
   वर्गीय व्यंजनों का तीसरा, चौथा और पाँचवां व्यंजन 'सघोष होता है।
   (ग, घ, ङ, ज, झ, ञ, ड, ढ, ण, द, ध, न, ब, भ, म) अन्तःस्थ (य, र, ल, व) तथा ह । सभी स्वर भी घोष वर्ण होते हैं।

2. **श्वास वायु की मात्रा**- उच्चारण में वायु प्रक्षेप या श्वास वायु की मात्रा की दृष्टि से व्यंजनों के दो भेद है-

1. **अल्पप्राण** 2. **महाप्राण**

1. **अल्पप्राण**- जिनके उच्चारण में श्वास मुख से अल्प मात्रा में निकले और जिनमें 'हकार' जैसी ध्वनि नहीं होती, उन्हें अल्पप्राण ध्वनियाँ कहलाती हैं। प्रत्येक वर्ग का पहला, तीसरा और पाँचवा वर्ण अल्पप्राण व्यंजन है।

   जैसे- क, ग, ङ, च, ज, ञ, ट, ड, ण, त, द, न, प, ब, म।
   अन्तस्थ (य, र, ल, व) तथा सभी स्वर भी अल्पप्राण ही है।

2. **महाप्राण**- महाप्राण व्यंजनों के उच्चारण में 'हकार' जैसी ध्वनि विशेष रूप से रहती है और श्वास अधिक मात्रा में निकलती है। प्रत्येक वर्ग का दूसरा और चौथा वर्ण तथा समस्त ऊष्म वर्ण महाप्राण होते हैं।

   जैसे- ख, घ, छ, झ, ठ, ढ, थ, ध, फ, भ और ष, श, स, ह।

3. **मुख अवयवों द्वारा श्वास को रोकने के रूप में-**

ध्वनियों का उच्चारण करते समय हमारी जीव या अन्य मुख्य अवयव अनेक प्रकार से प्रयत्न करते हैं इस आधार पर व्यंजनों को निम्नलिखित विभाजन किया जाता है।
स्पर्शी व्यंजन- ये कंठ, तालु, मूर्धा, दंत और ओष्ठ स्थानों के स्पर्ष से बोले जाते हैं इसलिए इन्हें स्पर्शी व्यंजन कहते हैं।
उदाहरणार्थ-
क वर्ग -क, ख, ग, घ, ङ (कंठ से)
च वर्ग -च, छ, ज, झ, ञ (तालु से)
ट वर्ग - ट, ठ, ड, ढ, ण (मूर्धा से)
त वर्ग - त, थ, द, ध, न (दन्त से)
प वर्ग - प, फ, ब, भ, म (ओष्ठ से)
नासिक्य- जिन व्यंजनों का उच्चारण करते समय मुख-अवयव वायु को रोकते हैं परंतु वायु पूरी तरह मुख से न

नियम (6). यदि विसर्ग के बाद 'र' वर्ण आए तो विसर्ग से पहले लघु मात्रा की दीर्घ मात्रा में बदल देते हैं तथा विसर्ग का लोप हो जाता है |

उदाहरण –

निः + रस = नीरस

निः + रोग = नीरोग

निः + रव = नीरव

दुः + राज = दूराज

अध्याय – 3

समास एवं समास – विग्रह

⇒ **समास का शाब्दिक अर्थ** - जोड़ना या मिलाना। अर्थात समास प्रक्रिया में दो या दो से अधिक शब्दों को आपस में मिलाकर एक शब्द बनाया जाता है!

⇒ दो अथवा दो से अधिक शब्दों से मिलकर बने हुए नए सार्थक शब्द को समास कहते है।

⇒ **समस्त पद (सामासिक पद)**-समास के नियमों का पालन करते हुए जो शब्द बनता है उसे समास पद या सामासिक,पद कहते हैं।

⇒ समस्त पद के सभी पदों को अलग अलग किए जाने की प्रक्रिया को समास विग्रह कहलाती है।

⇒ समास वह शब्द रचना है जिसमें अर्थ की दृष्टि से परस्पर स्वतंत्र सम्बन्ध रखने वाले दो या दो से अधिक शब्द मिलकर किसी अन्य स्वतंत्र शब्द की रचना करते है।

सामासिक शब्द में आए दो पदों में पहले पद को पूर्वपद तथा दूसरे पद को उत्तरपद कहते हैं।

जैसे:-

गंगाजल		गंगाजल	- गंगा का जल
गंगा	जल	गंगा जल	
(पूर्वपद)	(उत्तरपद)	(समस्त पद)	(समास विग्रह)

कम से कम शब्दों में अधिक से अधिक अर्थ को प्रस्तुत कर देना ही

समास का प्रमुख उद्देश्य होता है।

समास 6 प्रकार के होते हैं

समास के प्रकार Types Of Compound

1. तत्पुरुष समास
2. कर्मधारय समास
3. अव्ययीभाव समास
4. द्विगु समास
5. बहुव्रीहि समास
6. द्वंद्व समास

1. कर्म तत्पुरुष (द्वितीय तत्पुरुष) (को)
2. करण तत्पुरुष (तृतीय तत्पुरुष) (से, के द्वारा)
3. संप्रदान तत्पुरुष (चतुर्थी तत्पुरुष) (के लिए)
4. अपादान तत्पुरुष (पंचमी तत्पुरुष) से (अलग होने के अर्थ से)
5. सम्बन्ध तत्पुरुष (षष्ठी तत्पुरुष) (का, की, के)
6. अधिकरण तत्पुरुष (सप्तमी तत्पुरुष) (में, पर)

पद की प्रधानता के आधार पर समास का वर्गीकरण

(क) पूर्वपद प्रधान –अव्ययीभाव

(ख) उत्तर पद प्रधान - तत्पुरुष, कर्मधारय और दिगु

(ग) दोनों पद प्रधान-द्वन्द्व

(घ) दोनों पद अप्रधान - बहुव्रीहि (इसमें कोई तीसरा अर्थ प्रधान होता है)

नोट:

भारतीय भाषा में कुछ ऐसे शब्द हैं जिनके रुप में लिंग, वचन के अनुसार परिवर्तन या विकार उत्पन्न नहीं होता है, उन्हें अव्यय शब्द या अविकारी शब्द कहते हैं।

अर्थात ऐसे शब्द जिनका व्यय ना हो, उन्हे अव्यय शब्द कहते है।

जैसे – यथा, तथा, यदा, कदा, आ, प्रति , जब, तब, भर, यावत, हर आदि।

(1) अव्ययीभाव समास Adverbial Compound

जिस समास में पहला पद अर्थात पूर्वपद प्रधान तथा अव्यय होता है, उसे अव्ययीभाव समास कहते है।

पहचान- सामासिक पद (समस्त पद) मे यथा, आ, अनु, प्रति, भर, तथा, यदा, कदा, जब, तब, यावत,

समस्त पद		विग्रह
आजन्म	-	जन्म से लेकर
आमरण	-	मरने तक
आसेतु	-	सेतु तक
आजीवन	-	जीवन भर
अनपढ़	-	बिना पढ़ा
आसमुद्र	-	समुद्र तक
अनुरुप	-	रुपके योग्य
अपादमस्तक	-	पाद से मस्तक तक
यथासंभव	-	जैसा सम्भव हो / जितना सम्भव हो सके
यथोचित	-	उचित रुप में / जो उचित हो
यथा विधि	-	विधि के अनुसार
यथामति	-	मति के अनुसार
यथाशक्ति	-	शक्ति के अनुसार
यथानियम	-	नियम के अनुसार
यथाशीघ्र	-	जितना शीघ्र हो
यथासमय	-	समय के अनुसार
यथासामर्थ	-	सामर्थ के अनुसार
यथाक्रम	-	क्रम के अनुसार
प्रतिकूल	-	इच्छा के विरुद्ध

INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

प्रतिमाह - प्रत्येक -माह

प्रति दिन - प्रत्येक - दिन

भरपेट - पेट भर के

हाथों हाथ - हाथ ही हाथ में / (एक हाथ से दूसरे हाथ)

परम्परागत - परम्परा के अनुसार

थल - थल - प्रत्येक स्थान पर

बोटी - बोटी - प्रत्येक बोटी

नभ -नभ - पूरे नभ में

रंग - रंग - प्रत्येक रंग के

मीठा - मीठा - बहुत मीठा

चुप्प -चुप्प - बिल्कुल चुपचाप

आगे- आगे - बिल्कुल आगे

गली - गली - प्रत्येक गली

दूर - दूर - बिल्कुल दूर

सुबह - सुबह - बिल्कुल सुबह

एकाएक - एक के बाद एक

दिनभर - पूरे दिन

दो - दो - दोनों दो | प्रत्येक दोनों

रोम- रोम - पूरे रोम मे

नए - नए - बिल्कुल नए

हरे - हरे - बिल्कुल हरे

बारी - बारी - एक एक करके / प्रत्येक करके

बे - मारे - बिना मारे

जगह - जगह - प्रत्येक जगह

मील - भर - पूरे मील

गरमागरम - बहुत गरम

पतली-पतली - बहुत पतली

हफ्ता भर - पूरे हफ्ते

प्रति एक - प्रत्येक

एक - एक - हर एक / प्रत्येक

धीरे - धीरे - बहुत धीरे

अलग-अलग - बिल्कुल अलग

मनचाहे - मन के अनुसार

छोटे - छोटे - बहुत छोटे

भरे - पूरे - पूरा भरा हुआ

जानलेवा - जान लेने वाली

दूरबीन - दूर देखने वाली

सहपाठी - साथ पढ़ने वाला / वाली

खुला - खुला - बहुत खुला

कोना-कोना - सारा कोना

मात्र - केवल एक

भरा-भरा - बहुत भरा

शुरू - शुरू - बहुत आरंभ/शुरु में

अंग- अंग - प्रत्येक अंग

अहेतुक - बिना किसी कारण के

प्रतिवर्ष - वर्ष - वर्ष /हर वर्ष

छातीभर - छाती तक

बार-बार - बहुत बार

देखते - देखते - देखते ही देखते

एकदम - अचानक से

रात-रात - पूरी रात भर

सालों-साल - बहुत साल

रातों-रात - बहुत रात

ड़रा - ड़रा - बहुत ड़रा

तरह- तरह - बहुत तरह के

भरपूर - पूरा भर के

सालभर - पूरे साल

INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

घर-घर	-	प्रत्येक घर
नए-नए	-	बिल्कुल नए
घूमता- घूमता	-	बहुत घूमता
बेशक	-	बिना शक के
अलग-अलग	-	बिल्कुल अलग
अकारण	-	बिना कारण के
घड़ी-घड़ी	-	हर घड़ी
पहले-पहले	-	सबसे पहले
भरसक	-	पूरी शक्ति से
बखूबी	-	खूबी के साथ
नि: सन्देह	-	सन्देह के बिना
बेअसर	-	असर के बिना
सादर	-	आदर के साथ
बेकाम	-	बिना काम के
अनजान	-	बिना जाने
प्रत्यक्ष	-	आँख के सामने
बेफायदा	-	फायदे के बिना
बाकायदा	-	कायदे के अनुसार
बेखटके	-	बिना खटके के
निड़र	-	ड़र के बिना
यथाशीघ्र	-	जितना शीध्र हो
प्रतिध्वनि	-	ध्वनि की ध्वनि

(2) <u>तत्पुरुष समास Determinative compound</u>

जिस समास मे बाद का अथवा उत्तरपद प्रधान होता है एवं पूर्व पद गौण होता है तथा दोनों पदो वे बीच का कारक- चिन्ह लुप्त हो जाता है, उसे तत्पुरुष समास कहते है। तत्पुरुष समास छ: प्रकार के होते हैं, जो निम्नलिखित हैं-

[I] कर्मतत्पुरुष समास (द्वितीय तत्पुरुष):- जिस तत्पुरुष समास में कर्मकारक की विभक्ति 'को' लुप्त हो जाती है, वहाँ कर्मतत्पुरुष समास है। जैसे –

समस्त पद		**विग्रह**
गगनचुम्बी	-	गगन को चूमने वाला
यश प्राप्त	-	यश को प्राप्त
चिड़ीमार	-	चिड़ियों को मारने वाला
ग्रामगत	-	ग्राम को गया हुआ
रथचालक	-	रथ को चलाने वाला
जेबकतरा	-	जेब को काटने वाला
जनप्रिया	-	जन को प्रिय
स्वर्गीय	-	स्वर्ग को गया
वनगमन	-	वन को गमन
सर्वप्रिय	-	सब को प्रिय
गिरहकट	-	गिरह को काटने वाला गिरह / गांठ
अतिथ्यर्पण	-	अतिथि को अर्पण
गृहागत	-	घर को गया हुआ
मरणासन्न	-	मरण को पहुंचा हुआ
परलोकगमन	-	परलोक को गमन
स्वर्गगत	-	स्वर्ग को गत (गया हुआ)
शरणागत	-	शरण को आगत
भयप्राप्त	-	भय को प्राप्त
स्वर्ग प्राप्त	-	स्वर्ग को प्राप्त
आशातीत	-	आशा को अतीत
मनपसन्द	-	मन को पसन्द
रूपधारी	-	रूप को धारण करने वाला
वर दिखाई	-	वर को दिखाना
मर्म भेद्री	-	दिल को भेद्ने वाला
कार्यकर्ता	-	कार्य को करने वाला
रात जगा	-	रात को जगा हुआ
कठफोड़वा	-	काठ (लकड़ी)को फोड़ने वाला
देशगत	-	देश को गत (गया हुआ)
पाकिटमार	-	पाकिट को मारने (काटने) वाला
विरोधजनक	-	विरोध को जन्म देने वाला
दिल तोड़	-	दिल को तोड़ने वाला
आपत्तिजनक	-	आपति को जन्म देने वाला
हस्तगत	-	हस्त को गया हुआ
प्राप्तोदक	-	उदक (जल) को प्राप्त तक
तिलकुटा	-	तिल को कूटकर बनाया हुआ
जगसुहाता	-	जग को सुहाने वाला
संकटापन्न	-	संकट को प्राप्त आपन्न
विदेशगमन	-	विदेश को गमन सर्वज्ञ
नरभक्षी	-	नरों को भक्षित करने वाला
स्याहीचूस	-	स्याही को चूसने वाला
कनकटा	-	कान को कटवाने वाला
विद्युत मापी	-	विद्युत को मापने वाला
कृष्णार्पण	-	कृष्ण को अर्पण

पति – पत्नी	-	पति और पत्नी
दादी – दादा	-	दादी और दादा
नाच –गान	-	नाच और गान
लड़ते – भिड़ते	-	लड़ते और भिड़ते
कूदते - फाँदते	-	कूदते और फाँदते
झुण्ड–मुण्ड	-	झुण्ड और मुण्ड
सभा–सोसाइटियों	-	सभा और सोसाइटियों
विशेषज्ञ–व्याख्याता	-	विशेषज्ञ और व्याख्याता
एकाध	-	एक या आधा
हिन्दी बांग्ला	-	हिन्दी और बांग्ला
ईर्द – गिर्द	-	ईर्द या गिर्द
साँप – बिच्छु	-	सांप और विच्छु
ताक – झांक	-	ताक और झाँक
हाव – भाव	-	हाव और भाव
चूल्हे – चौके	-	चूल्हे और चौके
भूखे – प्यासे	-	भूखे और प्यासे
साल-दो साल	-	एक साल या दो साल
नर – नारियों	-	नर और नारियों
गोबरी – लिपाई	-	गोबरी और लिपाई
सभा– सम्मेलन	-	सभा और सम्मेलन
जमीन – जायदादों	-	जमीन और जायदादों
खरीद –बिक्री	-	खरीद और बिक्री
तर्क-वितर्क	-	तर्क या वितर्क
पत्र – पत्रिकाएँ	-	पत्र और पत्रिकाएँ
सीधे – सादे	-	सीधे या सादे
सजे - धजे	-	सजे और धजे
रुप – प्रकार	-	रूप और प्रकार
चीख – पुकार	-	चीख और पुकार
लाभा-लाभ	-	लाभ और अलाभ (हानि)
रीति – रिवाज	-	रीति और रिवाज
राम-कृष्ण	-	राम भौर कृष्ण

2. समाहार द्वंद्व – इस समास का विग्रह – 'आदि'

उदाहरण –

आगा	– पीछा	=	आगा ,पीछा आदि
आहार	– निंद्रा	=	आहार , निद्रा आदि
आटा	– दाल	=	आटा , दाल आदि
कंकर	– पत्थर	=	कंकर , पत्थर आदि
कपड़ा	– लत्ता	=	कपड़ा , लत्ता आदि
करनी	– भरनी	=	करनी , भरनी आदि
काम	– काज	=	काम ,काज आदि
कीड़ा	– मकोड़ा	=	कीड़ा , मकोड़ा आदि
कुरता	– टोपी	=	कुरता , टोपी आदि
खान	– पान	=	खान , पान आदि
खाना	-पीना	=	खाना , पीना आदि
चाय	– पानी	=	चाय , पानी आदि
धन	– दौलत	=	धन , दौलत आदि
पेड़	– पौधे	=	पेड़ , पौधे आदि
फल	– फूल	=	फल , फूल आदि
मेल	– मिलाप	=	मेल , मिलाप आदि
सुख	– सुविधा	=	सुख , सुविधा आदि
भला	– बुरा	=	बुरा आदि
लेखा	– जोखा	=	लेखा , जोखा आदि
हाथ	– पाँव	=	हाथ , पाँव आदि
मोल	– तोल	=	मोल , तोल आदि ।

3. वैकल्पिक द्वंद्व – इस समस का विग्रह – या \ अथवा

आज	– कल	=	आज या कल
घट	– बढ़	=	घट या बढ़
हानि	– लाभ	=	हानि या लाभ
जीवन	– मरण	=	जीवन या मरण
शादी	– गमी	=	शादी या गमी
गुण	– दोष	=	गुण या दोष
धर्मा	– धर्म	=	धर्म या अधर्म
राग	– द्वेष	=	राग या द्वेष
यश	– अपयश	=	यश या अपयश
सुख	– दुःख	=	सुख या दुःख
पाप	– पुण्य	=	पाप या पुण्य
हाँ	– ना	=	हाँ या ना

(6) <u>बहुव्रीहि समास (Attributive Compound):-</u>

जिस समस्त पद में कोई भी पद (पूर्वपद अथवा उत्तरपद)प्रधान नही होता है बल्कि दोनों पद मिलकर किसी तीसरे पद की ओर संकेत करते है। यही तीसरा पद प्रधान होता है। इस प्रकार का समास बहुव्रीहि समास कहलाता है।

बहुव्रीहि समास भी द्विगु समास तथा कर्मधारय समास की तरह विशेषण और संज्ञा से बनता है।

<u>पहचान</u> –इस समास का विग्रह करने पर 'वाला', 'जिसका','जिसके' आदि शब्दों का प्रयोग होता है।

जैसे:- पीताम्बर, कोई व्यक्ति जो पीले वस्त्र पहनता हो परन्तु इस शब्द का विशेष अर्थ है-भगवान श्रीकृष्ण।

दूसरे शब्दों मे कह सकते है कि बहुव्रीही समास एक व्यक्तिवाचक संज्ञा बन जाता है।

बहुव्रीहि समास के अन्य उदाहरण:-

समस्त पद		**विग्रह**
लंबोदर	=	लंबा है उदर जिसका अर्थात् गणेश जी (उदर - पेट)
चक्रपाणि	=	चक्र है पाणि (हाथ) में जिसके अर्थात् विष्णु
प्रधानमन्त्री	=	मन्त्रियों में प्रधान है जो (प्रधानमन्त्री)
पंकज	=	पंक (कीचड़) में पैदा हो जो (कमल)
अनहोनी	=	न होनी वाली घटना (कोई विशेष घटना)
निशाचर	=	निशा (रात) में विचरण करने वाला अर्थात् राक्षस
चौलड़ी	=	चार है लड़ियाँ जिसमें अर्थात् माला
चंद्रमौलि	=	चंद्र है मौलि पर जिसके अर्थात् शिव (मौलि = मुकुट,चोटि)
विषधर	=	विष को धारण करने वाला अर्थात् सर्प
मृगेंद्र	=	मृगों का इन्द्र अर्थात् सिहं
मृत्युंजय	=	मृत्यु को जीतने वाला अर्थात् शंकर
कपीश	=	कपियों मे हैं ईश (भगवान) जो अर्थात् हनुमान
खगेश	=	खगों (पक्षियों) का ईश (भगवान) है जो अर्थात् गरुण
चन्द्र भाल	=	भाल (माथा) पर चन्द्रमा है जिसके अर्थात् शिव
जलज	=	जल में उत्पन्न होता हैं वह अर्थात् शिव
जलद	=	जल देता है जो वह अर्थात् बादल
नीलाम्बर	=	नीला हैं अम्बर (वस्त्र) जिसका अर्थात् बलराम
मुरलीधर	=	मुरली को धरे रहे (पकड़े रहे) वह अर्थात् श्रीकृष्ण
वज्रायुध	=	वज्र है आयुध (हथियार) जिसका वह अर्थात् इन्द्र
वीणापाणि	=	वीणा हैं पाणि (हाथ) में जिसके वह अर्थात् माँ सरस्वती
दुरात्मा	=	दुह (बुरी) हैं आत्मा जिसकी
बारहसिंगा	=	बारह हैं सिंग जिसके ऐसा मृग विशेष
अल्पबुद्धि	=	अल्प (थोड़ी) बुद्धि जिसकी
घूसखोर	=	घूस खाता हैं जो
नकटा	=	नाक है कटी जिसकी
षडानन	=	षड़ (छ:) है आनन (मुख) जिसके अर्थात् कार्तिकेय
अंशुमाली	=	अंशु (किरणे) हैं माला जिसकी अर्थात् सूर्य
सकेशी	=	सुन्दर हैं केश (किरणे) जिसके अर्थात् चाँद अथवा कोई स्त्री विशेष
पद्मासना	=	पद्म (कमल) है आसन जिसका अर्थात् सरस्वती
पतझड़	=	पत्ते झड़ते हैं जिसमें (एकऋतु)
पंचानन	=	पंच (पाँच) है आनन (मुख) जिसके
चन्द्रशेखर	=	शेखर (माथे) पर चाँद हैं जिसके अर्थात् शिव जी
कसुमाकर	=	कुसुमों (फूलों) का खजाना है जो (वसन्त)
चारपाई	=	चार हैं पाए जिसके (खाट)
जितेन्द्रिय	=	जीत ली इन्द्रियाँ जिसने (संयमी पुरुष)
मृगलोचिनी	=	मृग (हिरन) के लोचनों (आँखों) के समान है लोचन जिसके
त्रिनयन	=	तीन हैं नयन (आँख) जिसकी अर्थात् शिवजी
मनमोहन	=	मन को मोहने वाला अर्थात् श्रीकृष्ण
चतुर्मुख	=	चार मुख हैं जिसके अर्थात् ब्रह्मा जी
कामचोर	=	काम की चोरी करे जो प्राणी
नमकहराम	=	नमक को हराम करे जो
परमात्मा	=	परम है (सबसे पहले का) जो आत्मा अर्थात् शिव अथवा विष्णु, ब्रह्मा
महात्मा	=	महान हैं आत्मा जिसकी (कोई पुरुष विशेष)

समस्त पद	गौण पद+गौण पद	विग्रह(सामान्य अर्थ)	सामान्य पद (इंगित अर्थ)
नीलकंठ	नील + कंठ	नीला कंठ हैं जिसका	शिवजी, एक पक्षी
गजानन	गज + आनन (मुख)	गज के समान हैं आनन जिसका	श्री गणेश जी
गिरिधर	गिरि + धर	गिरि को धारण करने वाला	श्री कृष्ण
चतुरानन	चतुर + आनन (मुख)	चार मुख वाला	ब्रह्मा जी
चक्रधर	चक्र + धर	जिसके हाथ मे चक्र हो	श्री कृष्ण
घनश्याम	घन + श्याम	काले बादल जैसा	श्री कृष्ण
त्रिलोचन	त्रि + लोचन	तीन आँखों वाला	शिवजी
दशानन	दश + आनन (मुख)	दस हैं आनन जिसके	रावण
महावीर	महा + वीर	महान हैं वीर जो	हनुमान
मयूरवाहन	मयूर + वाहन	मयूर की सवारी हैं जिसकी	कार्तिकेय
चतुर्भुज	चतुर + भुज	चार हैं भुजाएं जिसकी	विष्णु

कर्मधारय समास तथा बहुव्रीहि समास में अन्तर:-

इन दोनों समासों में अन्तर समझने के लिए इनके विग्रह पर ध्यान देना चाहिए।

⇒ कर्मधारय समास में एक पद (कोई एक पद ना कि पहला/दूसरा) विशेषण या उपमान होता हैं और दूसरा (कोई दूसरा पद) पद विशेष्य या उपमेय होता हैं।

जैसे:-

(i) नीलगगन अर्थात् नीला गगन (आकाश)/नीला हैंजो आकाश

व्याख्या: नीलगगन में एक पद नील अर्थात् नीला विशेषण हैं जबकि दूसरा पद गगन विशेष्य हैं।

(ii) चरण कमल अर्थात् कमल के समान चरण हैं जो

व्याख्या: चरण कमल मे एक पद चरण उपमेय (जिसकी तुलना की जाती हैं) हैं जबकि, दूसरा पद कमल उपमान (जिससे तुलना की जाती हैं) हैं।

⇒ बहुव्रीहि समास में समस्त पद किसी संज्ञा के विशेषण का कार्य करता हैं।

जैसे :- चक्रधर - चक्र को धारण करता हैं जो अर्थात् श्री कृष्ण

व्याख्या :- यहाँ पर समस्त पद अर्थात चक्रधर श्रीकृष्ण (संज्ञा) की विशेषता बता रहा हैं कि वह चक्र को धारण किए हुए हैं।

द्विगु समास तथा बहुव्रीहि समास के अन्तर :-

उन दोनों समासों में अन्तर समझने के लिए भी इनके विग्रह पर ध्यान देना चाहिए।

बहुव्रीहि समास में समस्त पद किसी संज्ञा के विशेषण का कार्य करता हैं जबकि द्विगु समास का पहला पद हमेशा संख्यावाचक विशेषण होता हैं।

जैसे:-

(I) दशानन - दस आनन (मुख) हैं जिसके अर्थात् रावण - बहुब्रीहि समास

दशानन - दस आननों (मुखों) का समूह - द्विगु समास

(II) चतुर्भुज - चार हैं भुजाएँ जिसकी अर्थात् विष्णु - बहुब्रीहि समास

चतुर्भुज- चार भुजाओं का समूह - द्विगु समास

नोट: एक ही सामासिक (समस्त) पद दो या दो से अधिक समासों का उदाहरण हो सकता हैं। इसकी रूपरेखा समास के विग्रह से स्पष्ट होती हैं।

उदाहरण:-		
नीलकंठ	-	नीला हैं कंठ जो (कर्मधारय) नीला कंठ हैं जिसका - शिवजी (बहुब्रीहि)
घनश्याम	-	घन के समान श्याम (कर्मधारय)

- **शहद –** पुष्परस , मधु , आसव , रस , मकरंद , सुषमा ।
- **सम्पूर्ण –** निखिल , अखिल , निश्शेष , सकल।
- **समूह –** वृन्द , पूँज ।
- **घटा –** कादम्बिनी , धनाली , धनावली , मेघमाला , मेघाली ।
- **केसर –** अंबर , कश्मीर , कुसुंश , जाफरान , पिण्याक , सौरभ , हरिचंदन ।
- **कूट –** छल , व्यंग्य , जटिल , जाली ।
- **कीचड़ –** कदर्भ , पंक ।
- **ओप –** आब , कांति , चमक ।
- **आगार –** खान , भंडार , संग्रह , स्त्रोत ।
- **अनार –** दाड़िम , शुकप्रिय , शुकोदन ।
- **अपार –** अनंत , असीम , निस्सीम ।
- **अनुकूल –** अनुरूप , अनुसार , मुआफिक , संगत ।
- **अथ –** आदि , प्रारंभ , आरंभ ।
- **अनुकरण –** अनुगमन , अनुवर्तन , अनुसरण , नकल ।
- **अनूठा –** अनोखा , निराला , बेजोड़ , विचित्र , विलक्षण ।
- **अग्राह्य –** अनर्गल , अनाहार्य , अपाच्य , अस्वीकार्य , निषिद्ध ।
- **अवनति –** अपकर्ष , ह्रास ।

अध्याय – 13

विलोम शब्द

“अ”

अकाल	सुकाल
अगम	सुगम
अग्र	पश्च
अग्रज	अनुज
अघ	अनघ
अघोष	सघोष
अतिथि	आतिथेय
अतल	वितल
अथ	इति
अर्थ	अनर्थ
अनन्त	अन्त
अनुग्रह	दण्ड,कोप
अन्तर्द्वन्द्व	बहिर्द्वन्द्व
अनिवार्य	ऐच्छिक
अन्तरंग	बहिरंग
अनुकूल	प्रतिकूल
अनुराग	विराग
अनुरूप	प्रतिरूप
अनुलोम	प्रतिलोम
अधम	उत्तम
अतिवृष्टि	अनावृष्टि
अनुरक्त	विरक्त
अल्पप्राण	महाप्राण
असीम	ससीम
अपकार	उपकार
अनाहूत	आहूत
अनुयायी	विरोधी
अंगीकार	अस्वीकार
अंतरंग	बहिरंग
अंतर्द्वन्द्व	बहिर्द्वन्द्व
अंधकार	प्रकाश \ आलोक
अकर्मक	सकर्मक

अकर्मण्य	कर्मण्य \ कर्मठ
अकाम	निष्काम , सकाम
अकेला	साथ
अगम	गम , सुगम
अग्रि	पश्च , पश्चात्
अघ (पाप)	अनघ (पवित्र)
अचर	चर
अचेत \ अचेतन	सचेत , चेतन
अज्ञ	विज्ञ \ प्रज्ञ \ सर्वज्ञ
अतल	वितल
अतिकाय (बड़ा शरीर)	कृशकाय \ लघुकाय
अतिथि	आतिथेय (मेजबान)
अतिवृष्टि	अनावृष्टि (अनावर्षण)
अधम	श्रेष्ठ , उत्तम
अधिकार	अनधिकार
अधिकृत	अनधिकृत
अधीर	धीर
अनंत	अंत
अनाहूत (बिना बुलाया)	आहूत
अनिवार्य	ऐच्छिक \ वैकल्पिक
अनुग्रह	दंड \ कोप
अनुरक्त	विरक्त
अनुराग	द्वेष , विराग
अनैक्य	ऐक्य (एकता)
अपकार	उपकार
अपचय (हानि)	उपचय (वृद्धि)
अपमान	सम्मान
अपयश	सुयश (यश)
अपराध	निरपराध
अपेक्षा	निरपराध
अपेक्षा	उपेक्षा
अभिज्ञ	अनभिज्ञ \ अज्ञ

अभिमुख = पराङ्मुख (अन्य की तरफ मुख रखने वाला)

अभियुक्त	अभियोगी
अभिशाप	वरदान
अमर	मर्त्य
अमृत	विष
अरुचि	सुरुचि
अर्जन	वर्जन (त्याग)
अर्पण	ग्रहण
अर्वाचीन (नया)	प्राचीन (पुराना)
अल्प	अति, महा, बहु, प्रचुर, अधिक
अल्पायु	दीर्घायु \ चिरायु
अवकाश	अनवकाश , व्यस्तता
अवनत (नीचा)	उन्नत (ऊँचा)
अवनति (पतन)	उन्नति
अवनि	अंबर
अवर(छोटा)	प्रवर (बड़ा)
अवलम्ब	निरवलम्ब
अवश्य	संभवतः
अवसाद (दुःख)	प्रफुल्लता

अस्तेय (चोरी न करना) = स्तेय (चोरी)

“आ”

आग्रह	दुराग्रह
आड़म्बर	सादगी
आच्छादित	अनाच्छादित
आचार	अनाचार
आलोक	अन्धकार
आक्रमण	प्रतिरक्षा
आकाश	पाताल
आगमन	प्रस्थान,निर्गमन
आतुर	निरातुर
आरम्भ	समापन
आवृत	अनावृत
आरूढ़	अनारूढ़
आमिष	निरामिष
आशीर्वाद	अभिशाप
आयात	निर्यात

आभ्यातर	बाह्य
आवर्तक	अनावर्तक
आकर्षण	विकर्षण , अनाकर्षण, अपकर्षण
आकांक्षा	अनाकांक्षा
आकाश	पाताल
आकुंचन (सिकुड़ना)	प्रसारण
आक्रमण	प्रतिरक्षा
आगत	अनागत
आगमन	निर्गमन
आग्रह	दुराग्रह
आज्ञापालक	अवज्ञा
आज़ादी	गुलामी
आडंबर	सादगी
आतुर	अनातुर
आत्मनिर्भर	अनुजीवी , परजीवी
आदर	निरादर
आदि	अंत
आदृत (सम्माननीय)	अनादृत , निरादृत , तिरस्कृत
आधार	निराधार
आनंद	विषाद , शोक
आमिष (सामिष)	निरामिष (शाकाहारी)
आयात	निर्यात
आरूढ़ (सवार)	अनारूढ़
आरोह	अवरोह
आर्द्र (गिला)	शुष्क, अनार्द्र
आर्ष (वैदिक)	अनार्ष
आवर्तन	प्रत्यावर्तन
आवास	प्रवास

आविर्भाव (पैदा होना) = तिरोभूत \ तिरोहित

आवृत (ढका हुआ)	अनावृत
आशा	निराशा
आशिष्	अभिशाप , शाप
आश्रित	निराश्रित
आसक्त	अनासक्त
आह्लाद (प्रसन्नता)	विषाद (दुःख)
आह्वान	विसर्जन

"इ"

इच्छा	अनिच्छा
इहलोक	परलोक
इति (समाप्ति)	अथ (प्रारम्भ)
अनिष्ट	इष्ट

"ई"

ईमानदार	बेईमान
ईश्वर	अनीश्वर
ईर्ष्या	प्रेम
ईहा	अनीहा (अनिच्छा)

"उ"

उग्र	सौम्य
उत्तम	अधम
उदार	कृपण, (कंजूस/अनुदार)
उपजाऊ	अनुपजाऊ
उपचार	अपचार
उपयुक्त	अनुपयुक्त
उत्थान	पतन
उन्मीलन	निमीलन
उन्नत	अवनत
उपकार	अपकार
उत्कर्ष	अपकर्ष
उन्नति	अवनति
उन्मूलन (उखाड़ना)	स्थापन, रोपण
उत्तीर्ण	अनुत्तीर्ण
उपत्यका	अधित्यका

अध्याय – 16

समश्रुत भिन्नार्थक शब्द / अनेकार्थी शब्द

भिन्नार्थक शब्दों से अभिप्राय है, ऐसे शब्द जिनके अनेक अर्थ हों। हिंदी भाषा में भी कुछ ऐसे शब्द हैं, जिनका प्रयोग कई अर्थों में होता है। उनके अर्थों का ज्ञान वाक्य में प्रयोग से ही हो सकता है।

कुछ ऐसे ही शब्दों का संग्रह नीचे दिए जा रहे हैं –

1. **अनंत** – आकाश, जिसका अंत न हो, ईश्वर, शेषनाग।
2. **आली** – सखी, पंक्ति।
3. **अलि** – सखी, कोयल, भँवरा।
4. **अवधि** – समय, सीमा।
5. **आदि** – आरंभ, इत्यादि।
6. **उपचार** – इलाज, उपाय।
7. **अंतर** – हृदय, भेद, फर्क, व्यवधान, अवधि, अवसर।
8. **अंक** – नाटक का सर्ग, परिच्छेदन, नंबर, चिह्न, गोद।
9. **अमर** – ईश्वर, देवता, शाश्वत, आकाश और धरती के मध्य में।
10. **अधर** – होंठ, नीचे, पराजित।
11. **अंबर** – आकाश, कपड़ा
12. **अदृष्ट** – जो देखा न जाए, भाग्य, गुप्त, रहस्य।
13. **अक्षर** – अविनाशी, वर्ण, ईश्वर, आत्मा, आकाश, धर्म, तप।
14. **अब्धि** – सागर, समुद्र।
15. **अज** – ब्रह्म, शिव, बकरा, दशरथ के पिता।
16. **अब्ज** – चंद्रमा, कमल, शंख, कपूर।
17. **अक्ष** – रथ की धुरी, जुआ खेलना, पासा, रेखा, जो दोनों ध्रुवों को मिलाए।
18. **अर्थ** – ऐश्वर्य, धन, हेतु, मतलब, प्रयोजन।
19. **अर्क** – सूर्य, रस, आका का पौधा।
20. **अरुण** – हल्का लाल रंग, सूर्य का सारथी, प्रभात का सूर्य।
21. **अवकाश** – छुट्टी, बीच के आराम का समय, मौका।
22. **अपवाद** – निंदा, किसी नियम का विरोधी।
23. **अभिजात** – पूज्य, उच्च कुल का, सुंदर।
24. **उत्तर** – उत्तर दिशा, जवाब, पीछे।
25. **आम** – (फलों का राजा) फल, साधारण, विख्यात।
26. **और** – तथा, दूसरा, अधिक, योजक शब्द।
27. **कनक** – धतूरा, सोना, गेहूँ।
28. **कर** – हाथ, किरण, हाथी की सूँड़, टैक्स, करना, क्रिया।
29. **कर्ण** – कान, पतवार, कुंती पुत्र कर्ण, त्रिभुज के समकोण के सामने की भुजा।
30. **कल** – बीता दिन, आने वाला दिन, सुख, मशीन।
31. **काल** – अवसर, समय, मृत्यु, यम, शनि, शिव।
32. **काम** – कार्य, धंधा, कामदेव, इच्छा, शुक्र।
33. **कुल** – वंश, सारा, सभी।
34. **कोश** – कोष, खज़ाना, डिक्शनरी, म्यान, फूल का भीतरी भाग।
35. **गुण** – विशेषता, रस्सी स्वभाव।
36. **गुरु** – शिक्षक, श्रेष्ठ, बड़ा, भारी, दो मात्राएँ (छंद में)।
37. **ग्रहण** – लेना, सूर्य ग्रहण, चंद्र ग्रहण, स्वीकार करना।
38. **गिरा** – बोलने की शक्ति, जीभ, सरस्वती, वाणी।
39. **गौ** – गाय, इंद्रिय, वाणी, पृथ्वी।
40. **घट** – घड़ा, हृदय, कम, देह, पिंड।
41. **घन** – बादल, घना, भारी।
42. **चक्र** – अस्त्र, पहिया, गोल वस्तु, चक्कर, भँवर।
43. **चीर** – रेखा, वस्त्र, चीरना, पट्टी।
44. **चपला** – स्त्री, बिजली, लक्ष्मी, नटखट, चंचल।
45. **जवान** – युवा, सैनिक, योद्धा।
46. **जीवन** – जिंदगी, प्राण, जल, वृत्ति।
47. **जड़** – मूल, मूर्ख, सरदी से ठिठुरा, अचेतन।
48. **तीर** – बाण, तीर का निशान, तट।
49. **तात** – पिता, भाई, पूज्य, मित्र।
50. **तनु** – शरीर, पतला, कम, कोमल।
51. **तम** – अँधेरा, कालिख, अज्ञान, क्रोध, राहु, पाप।
52. **तप** – तपस्या, साधना, अग्नि।
53. **तार** – धातु का तार, तारघर से संदेश भेजना, तारना।

INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

54. **तारा** – आँख की पुतली, सितारा, महाराजा हरिश्चंद्र की पत्नी।

55. **दल** – पत्ता, समूह, सेना, पक्ष।

56. **दक्षिण** – दक्षिण दिशा, दाहिना, अनुकूल।

57. **दक्ष** – कुशल, अग्नि, नदी, प्रजापति।

58. **द्विज** – ब्राह्मण, पक्षी, दाँत, चंद्रमा।

59. **धन** – पूँजी, द्रव्य।

60. **धारणा** – बुद्धि, विचार, विश्वास।

61. **नाग** – सर्प, हाथी, नागकेसर।

62. **नग** – नगीना, पर्वत।

63. **नायक** – मुख्यपात्र, नेता, मार्गदर्शक।

64. **पट** – कपड़ा, दरवाज़ा, तख्ता।

65. **पत्र** – पत्ता, चिट्ठी, पृष्ठ, पंख।

66. **पद** – पैर, शब्द, छंद, पदवी, अधिकार, स्थान, भाग, गीत।

67. **पय** – पानी, दूध।

68. **प्रकृति** – स्वभाव, कुदरत, मूलावस्था।

69. **पतंग** – सूर्य, कीट, आकाश में उड़ाई जाने वाली पतंग।

70. **पानी** – चमक, जल, प्रतिष्ठा, जीवन।

71. **पोत** – नाव, लड़का।

72. **पक्ष** – पंख, बल, आधार, एक दल के लोग।

73. **प्रसाद** – आशीर्वाद, कृपा, हर्ष।

74. **पयोधर** – तालाब, नारियल, स्तन, बादल।

75. **पृष्ठ** – कापी या पुस्तक का पन्ना, पीठ, पिछला भाग।

76. **पूर्व** – पहले, पिछला, पुराना, एक दिशा।

77. **फल** – फल, नतीजा, चीकू का फल।

78. **बल** – शक्ति, सेना।

79. **भूत** – प्रेत, बीता हुआ समय, पंचभूत, प्राणी।

80. **भृति** – मज़दूरी, मूल्य, वेतन।

81. **भेद** – राज़, प्रकार, फूट।

82. **भोग** – भाग्य, खाना, सहना।

83. **मत** – नहीं, राय, संप्रदाय।

84. **मधु** – शराब, शहद, एक राक्षस, मधु ऋतु (वसंत)।

85. **मूल** – जड़, आधार, असल धन।

86. **रस** – जड़, निचोड़, खट्टा-मीठा आनंद।

87. **रश्मि** – किरण, लगाम की रस्सी।

88. **वर** – वरदान, दूल्हा, श्रेष्ठ।

89. **वर्ण** – रंग, अक्षर, ब्राह्मण आदि चार वर्ण।

90. **वास** – निवास, घर, सुगंध।

91. **वंश** – गन्ना, बाँस, खानदान, समूह।

92. **विधि** – रीति, ब्रह्मा, भाग्य, ईश्वर।

93. **सूर** – सूर्य, सूरदास एक कवि, अंधा व्यक्ति, शूरवीर।

94. **सारंग** – मोर, साँप, बादल, हिरण।

95. **निशाचर** – राक्षस, उल्लू, चोर।

96. **स्नेह** – प्रेम, तेल, चिकनाहट, कोमलता।

97. **श्रुति** – वेद, कान।

98. **स्कंध** – कंधा, पेड़ का तना, ग्रंथ का भाग।

99. **श्री** – शोभा, लक्ष्मी, धनवैभव, संपत्ति।

100. **हरि** – सूर्य, विष्णु, इंद्र, सिंह।

101. **हर** – शिव, चुरा लेना।

102. **हल** – खेत जोतने का यंत्र, समाधान, उत्तर।

103. **हंस** – एक पक्षी, अश्व, ब्रह्मा, प्राणवायु, जीवात्मा।

104. **हार** – फूलों की माला, हारना।

105. **कला** – ढंग, उपाय, गुण, कला (आर्ट) विषय।

106. **कक्ष** – कमरा, बगल।

107. **कक्षा** – छात्रों की श्रेणी, समूह।

108. **कुंड़ल** – कान की बाली, साँप का कुंड़ली मारकर बैठना।

109. **कुटिल** – दुष्ट, घुंघराला, टेढ़ा।

110. **खग** – पक्षी, आकाश।

111. **गण** – छंद का अंग, समूह, भूत।

112. **गति** – दशा, चाल।

113. **मित्र** – साथी, सूर्य।

114. **रंग** – प्रेम, दशा, वर्ण

समोच्चरित भिन्नार्थक शब्द

हिंदी भाषा में कुछ ऐसे शब्द होते हैं, जिनका उच्चारण एक समान प्रतीत होता है, परंतु उनमें सूक्ष्म अंतर होता है और अर्थ बिल्कुल भिन्न होता है। जैसे – पुरुष, परुष इनका उच्चारण तो लगभग एक ही जैसा है, परंतु अर्थ (पुरुष –

वात्सल रस का उदाहरण -
किलकत कान्ह घुटरुवन आवत ।
मनिमय कनक नन्द के आँगन बिम्ब पकरिवे घावत ।।

अथवा
बाल दसा सुख निरखि जसोदा, पुनि – पुनि नन्द बुलावति ।
अँचरा - तर लै ढांकि सुर, प्रभु कों दूध पियावति ।।

विशेष - वात्सल रस का स्थायी भाव **स्नेह / वत्सलता अथवा वात्सल्य रति** होता है ।

(II) भक्ति रस

भक्ति रस की परिभाषा एवं अर्थ - भगवद् गुण सुनकर जब चित्त उसमे निमग्न हो जाता है ।
तो कहाँ **भक्ति रस** होता है ।

भक्ति रस का उदाहरण -
मेरो तो गिरधर गोपाल, दूसरो न कोई ।
जाके सर मोर मुकुट, मेरो पति सोई ।।

अथवा
एक भरोसा एक बल, एक आस विस्वास ।
एक राम घनस्याम हित, चातक तुलसीदास ।।

अथवा
राम जपु, राम जपु, राम जपु बावरे ।
घोर भव नीर - निधि, नाम निज नाव रे ।।

अध्याय - 3।

अलंकार

- अलंकार शब्द 'अलम्~' धातु से बना है जिसका अर्थ है 'आभूषण' । जिस प्रकार सुवर्ण आदि के आभूषणों से शरीर को शोभा बढ़ती है उसी प्रकार काव्य – अलंकारों से काव्य की ।

  साफ शब्दों में जिस प्रकार स्त्रियाँ श्रंगार कर और भी शोभायमान हो जाती हैं, उसी प्रकार अलंकार से कविता और भी सौंदर्यवती हो जाती है ।

- संस्कृत के अलंकार संप्रदाय के प्रतिष्ठापक आचार्य दण्डी के शब्दों में 'काव्य शोभाकरान~ धर्मान अलंकारान~ प्रचक्षते' – काव्य के शोभाकारक धर्म (गुण) अलंकार कहलाते हैं ।
- हिंदी के कवि केशवदास एक अलंकारवादी कवि हैं ।

अलंकार का प्रकार
अलंकार के तीन प्रकार हैं-

(A) **शब्दालंकार** – शब्द पर आश्रित अलंकार
(B) **अर्थालंकार** – अर्थ पर आश्रित अलंकार
(C) **आधुनिक / पाश्चात्य अलंकार** – आधुनिक काल में पाश्चात्य साहित्य से आए अलंकार

(A) शब्दालंकार -

काव्य में शब्दगत चमत्कार को शब्दालंकार कहते हैं। शब्दालंकार मुख्य रुप से सात हैं, जो निम्न प्रकार हैं- अनुप्रास, यमक, श्लेष, वक्रोक्ति, पुनरुक्तिप्रकाश, पुनरुक्तिवदाभास और वीप्सा आदि।

1. अनुप्रास अलंकार

एक या अनेक वर्गों की पास-पास तथा क्रमानुसार आवृत्ति को 'अनुप्रास अलंकार' कहते हैं। इसके पाँच भेद हैं-

(i) छेकानुप्रास अलंकार
जहाँ एक या अनेक वर्णों की एक ही क्रम में एक बार आवृत्ति हो वहाँ छेकानुप्रास अलंकार होता है ।

जैसे-
"इस करुणा कलित हृदय में,
अब विकल रागिनी बजती"
यहाँ करुणा कलित में छेकानुप्रास है।

(ii) वृत्यानुप्रास अलंकार
काव्य में पाँच वृत्तियाँ होती हैं-मधुरा, ललिता, प्रौढ़ा, परुषा और भद्रा। कुछ विद्वानों ने तीन वृत्तियों को ही मान्यता दी

हैं - उपनागरिका, परुषा और कोमला। इन वृत्तियों के अनुकूल वर्ण साम्य को वृत्यानुप्रास कहते हैं ।

जैसे-

'कंकन, किंकिनि, नूपुर, धुनि, सुनि'

यहाँ पर 'न' की आवृत्ति पाँच बार हुई है और कोमला या मधुरा वृत्ति का पोषण हुआ है। अतः यहाँ वृत्यानुप्रास है।

(iii) श्रुत्यनुप्रास अलंकार

जहाँ एक ही उच्चारण स्थान से बोले जाने वाले वर्णों की आवृत्ति होती है, वहाँ श्रुत्यनुप्रास अलंकार होता है ।

जैसे-

तुलसीदास सीदति निसिदिन देखत तुम्हार निठुराई

यहाँ 'त', 'द', 'स', 'न' एक ही उच्चारण स्थान (दन्त्य) से उच्चरित होने। वाले वर्णों की कई बार आवृत्ति हुई है, अतः यहाँ श्रुत्यनुप्रास अलंकार है।

(iv) अन्त्यानुप्रास अलंकार

जहाँ पद के अन्त के एक ही वर्ण और एक ही स्वर की आवृत्ति हो, वहाँ अन्त्यानुप्रास अलंकार होता है;

जैसे-

"जय हनुमान ज्ञान गुन सागर।
जय कपीश तिहुँ लोक उजागर"।

यहाँ दोनों पदों के अन्त में 'आगर' की आवृत्ति हुई है, अतः अन्त्यानुप्रास अलंकार है।

(v) लाटानुप्रास अलंकार

जहाँ समानार्थक शब्दों या वाक्यांशों की आवृत्ति हो परन्तु अर्थ में अन्तर हो, वहाँ लाटानुप्रास अलंकार होता है;

जैसे-

"पूत सपूत, तो क्यों धन संचय?
पूत कपूत, तो क्यों धन संचय"?

यहाँ प्रथम और द्वितीय पंक्तियों में एक ही अर्थ वाले शब्दों का प्रयोग हुआ, है परन्तु प्रथम और द्वितीय पंक्ति में अन्तर स्पष्ट है, अतः यहाँ लाटानुप्रास अलंकार है।

2. यमक अलंकार

जहाँ एक शब्द या शब्द समूह अनेक बार आए किन्तु उनका अर्थ प्रत्येक बार भिन्न हो, वहाँ यमक अलंकार होता है;

जैसे-

"जेते तुम तारे, तेते नभ में न तारे हैं"

यहाँ पर 'तारे' शब्द दो बार आया है। प्रथम का अर्थ 'तारण करना' या 'उद्धार करना' है और द्वितीय 'तारे' का अर्थ 'तारागण' है, अतः यहाँ यमक अलंकार है।

जैसे –

"कनक – कनक ते सौगुनी, मादकता अधिकाय"
वा खाए बौराय जग, या पाए बौराय" ।।

कनक शब्द की एक बार आवृति । सोना 2. धतूरा

3. श्लेष अलंकार

एक शब्द में एक से अधिक अर्थ जुड़े हों (जहाँ कोई शब्द एक ही बार प्रयुक्त हो किन्तु प्रसंग भेद में उसके अर्थ अलग-अलग हो वहां श्लेष अलंकार होता है ।

जैसे-

"रहिमन पानी राखिए बिन पानी सब सून।
पानी गए न ऊबरै, मोती मानुष चून।।"

यहाँ 'पानी' के तीन अर्थ हैं—'कान्ति', 'आत्मसम्मान' और 'जल', अतः यहाँ श्लेष अलंकार है।

4. वक्रोक्ति अलंकार

जहाँ पर वक्ता द्वारा भिन्न अभिप्राय से व्यक्त किए गए कथन का श्रोता 'श्लेष' या 'काकु' द्वारा भिन्न अर्थ की कल्पना कर लेता है, वहाँ वक्रोक्ति अलंकार होता है।

इसके दो भेद हैं-श्लेष वक्रोक्ति और काकु वक्रोक्ति।

(i) श्लेष वक्रोक्ति अलंकार

जहाँ शब्द के श्लेषार्थ के द्वारा श्रोता वक्ता के कथन से भिन्न अर्थ अपनी रुचि या परिस्थिति के अनुकूल अर्थ ग्रहण करता है, वहाँ श्लेष वक्रोक्ति अलंकार होता है ।

जैसे-

"गिरजे तुव भिक्षु आज कहाँ गयो,
जाइ लखौ बलिराज के द्वारे।
व नृत्य करै नित ही कित है,
ब्रज में सखि सूर-सुता के किनारे।
पशुपाल कहाँ? मिलि जाइ कहूँ,
वह चारत धेनु अरण्य मँझारे।।"

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से विभिन्न परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम देखने के लिए क्लिक करें - (Proof Video Link)

RAS PRE. 2021 - https://shorturl.at/qBJ18 (74 प्रश्न , 150 में से)

RAS Pre 2023 - https://shorturl.at/tGHRT (96 प्रश्न , 150 में से)

Rajasthan CET Gradu. Level - https://youtu.be/gPqDNlc6UR0

Rajasthan CET 12th Level - https://youtu.be/oCa-CoTFu4A

RPSC EO / RO - https://youtu.be/b9PKjl4nSxE

VDO PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856W18&t=202s

Patwari - https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=2s

PTI 3rd grade - https://www.youtube.com/watch?v=iA_MemKKgEk&t=5s

SSC GD - 2021 - https://youtu.be/2gzzfJyt6vI

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्नों की संख्या
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 प्रश्न आये
RAS Mains 2021	October 2021	52% प्रश्न आये
RAS Pre. 2023	01 अक्तूबर 2023	96 प्रश्न (150 मेंसे)
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)

SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
RPSC EO/RO	14 मई (1st Shift)	95 (120 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)
Raj. CET Graduation level	07 January 2023 (1st शिफ्ट)	96 (150 में से)
Raj. CET 12th level	04 February 2023 (1st शिफ्ट)	98 (150 में से)

& Many More Exams like UPSC, SSC, Bank Etc.

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

Our Selected Students

Approx. 137+ students selected in different exams. Some of them are given below -

Photo	Name	Exam	Roll no.	City
	Mohan Sharma S/O Kallu Ram	Railway Group - d	114195120370022	PratapNagar Jaipur
	Mahaveer singh	Reet Level- 1	1233893	Sardarpura Jodhpur
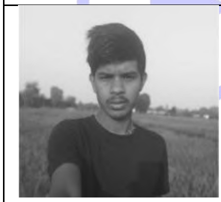	**Sonu Kumar Prajapati S/O Hammer shing prajapati**	SSC CHSL tier-1	2006018079	Teh.- Biramganj, Dis.- Raisen, MP
N.A	**Mahender Singh**	EO RO (81 Marks)	N.A.	teh nohar , dist Hanumangarh
	Lal singh	EO RO (88 Marks)	13373780	Hanumangarh
N.A	**Mangilal Siyag**	SSC MTS	N.A.	ramsar, bikaner

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO
FREE SAMPLE

	MONU S/O KAMTA PRASAD	SSC MTS	3009078841	kaushambi (UP)
	Mukesh ji	RAS Pre	1562775	newai tonk
	Govind Singh S/O Sajjan Singh	RAS	1698443	UDAIPUR
	Govinda Jangir	RAS	1231450	Hanumangarh
N.A	**Rohit sharma s/o shree Radhe Shyam sharma**	RAS	N.A.	Churu
	DEEPAK SINGH	RAS	N.A.	Sirsi Road , Panchyawala
N.A	**LUCKY SALIWAL s/o GOPALLAL SALIWAL**	RAS	N.A.	AKLERA , JHALAWAR
N.A	**Ramchandra Pediwal**	RAS	N.A.	diegana , Nagaur

	Monika jangir	RAS	N.A.	jhunjhunu
	Mahaveer	RAS	1616428	village-gudaram singh, teshil-sojat
N.A	**OM PARKSH**	RAS	N.A.	Teshil-mundwa Dis- Nagaur
N.A	**Sikha Yadav**	High court LDC	N.A.	Dis- Bundi
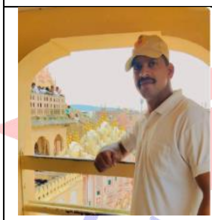	**Bhanu Pratap Patel s/o bansi lal patel**	Rac batalian	729141135	Dis.-Bhilwara
N.A	**mukesh kumar bairwa s/o ram avtar**	3rd grade reet level 1	1266657	JHUNJHUNU
N.A	**Rinku**	EO/RO (105 Marks)	N.A.	District: Baran
N.A.	**Rupnarayan Gurjar**	EO/RO (103 Marks)	N.A.	sojat road pali
	Govind	SSB	4612039613	jhalawad

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

	Jagdish Jogi	EO/RO (84 Marks)	N.A.	tehsil bhinmal, jhalore.
	Vidhya dadhich	RAS Pre.	1158256	kota

And many others……

नोट्स खरीदने के लिए इन लिंक पर क्लिक करें

Whatsapp करें – https://wa.link/001xtz

Online order करें – https://shorturl.at/sxD46

Call करें - 9887809083

FREE SAMPLE